त्रिमंत्र की साधना

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मन्त्र के द्वारा साधना की जाती है। मन्त्र का अर्थ है मनन करना होता है। मनन करने से मन्त्र में शक्ति उत्पन्न होती है। वाईब्रेशन से आत्मा की शुद्धि होती है और एकाग्रता बढ़ती है। इसके द्वारा कर्म शरीर क्षीण होता है। निर्जरा के कारण बुरे भाव दूर होते हैं। भगवान महावीर ने संवर और निर्जरा दो मार्ग बतलाए हैं। संवर एक तप है और निर्जरा उसका फल। जैन साधना निवृत्तमार्गी साधना है। इसमें नमस्कार महामंत्र का सर्वाधिक महत्व है। यह जैन धर्म का प्राण तत्व है। इसकी अलौकिकता, विलक्षणता और वैज्ञानिकता अचिन्त्य है। महामंत्र की वैज्ञानिकता, उसकी शब्द संरचना में छिपी प्रभावशीलता, उसके जप से स्वस्थ होने वाली शारीरिक, मानसिक बीमारियां और ज्योतिषीय दृष्टिकोण आदि विषयों का सांगोपांग वर्णन इस अध्याय में प्रस्तुत है।

यह परम आध्यात्मिक मंत्र है–मंत्राधिराज महामंत्र अचिन्त्य चिन्तामणि, अलौकिक पारसमणि और अद्वितीय हीर कणी है। यह अनंत–अनंत शक्तियों का भंडार तथा अपाय निरोध का राजमार्ग है। यह अनुपम, अनुत्तर, अपराजित, असाम्प्रदादिक और अनादि मंत्र है। इसके जप से हिंसक मनोवृत्तिया क्षीण होती है। इस प्रकार इसे समता, शांति, समृद्धि और श्रेष्ठता का मंत्र कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। जिस प्रकार एक वैज्ञानिक जिज्ञासु, विनम्र, धैर्यशील और अन्वेषण में संलग्न रहता है। उसी प्रकार साधना के क्षेत्र में भी एकाग्रता, अविचल संकल्प, धैर्य, लगन, निःसंशय, सतत साधना, साधक की सफलता के सोपान हैं।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में गगन में गमन करना दुर्लभ नहीं रहा है। परन्तु अलौकिक महिमा से अभिमंडित इस परमेष्ठि मंत्र की प्राप्ति दुर्लभ ही नहीं, अत्यन्त दुर्लभ है। जगत में कोई ऐसा मंत्र नहीं होगा जिसमें जीवन के उद्देश्य लिखे गये हों। व्यक्ति सापेक्ष न होकर गुण सापेक्ष होना ही इस महामंत्र की विरल विशेषता है। मंत्र में अर्हत् आत्मा का स्वरूप है, सिद्ध आत्मा

का पूर्ण शुद्ध स्वरूप है, आचार्य चारित्रिक निर्मलता का प्रेरक है, उपाध्याय ज्ञान के देवता और मुनि निष्काम सेवा का संवाहक है।

सचमुच नमस्कार महामंत्र आध्यात्मिक उन्नयन का महान सेतु है। इसकी रचना, शक्तिशाली वर्णों की संयोजना, ध्वनि प्रकंपन और शब्द विज्ञान अपने आप में अनूठा और अद्वितीय है। कुछ समय पूर्व तक सूक्ष्म ध्वनि तरंगों का कर्तृत्व धार्मिक जगत तक ही सीमित था। किन्तु वर्तमान युग में सूक्ष्म ध्वनि वैज्ञानिक तत्व बन गई है। सम्पूर्ण विश्व की घटनाओं को एक टेबल पर लाना अब आसान हो चुका है। कम्प्यूटर के द्वारा चैट (विचार–विमर्श) के प्रयोग की तुलना जैन आगमों में प्राप्त आहारक लब्धि से की जा सकती है। प्राचीनकाल में ऋषि मुनि अपनी जिज्ञासा का समाधान प्राप्त करने के लिए अपने शरीर से एक पुतला निकालते थे। जिसे आहारक शरीर कहा जाता था। इसके माध्यम से वे केवल ज्ञानी व्यक्ति से जिज्ञासा का अविलम्ब समाधान पा लेते थे।

प्राचीनकाल में टेलीपेथी प्रक्रिया के द्वारा संदेशों का आदान प्रदान ऋषि मुनि करते थे। आजकल रूस और अमेरिका जैसे संम्पन्न तथा उन्नत देशों के वैज्ञानिक यह जानने के लिये उत्सुक हैं कि जब आधुनिकतम यंत्र भी इतना अच्छा कार्य नहीं करते तब कैसे मनुष्य का साइकिक पावर सफल हो जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि विज्ञान की शक्ति की अपेक्षा योग शक्ति का चमत्कार अधिक शक्तिशाली है। भौतिक जगत में भाप की शक्ति, इलेक्ट्रोनिक की शक्ति, विद्युत शक्ति, गुरूत्वाकर्षण शक्ति ये शक्तियां बडी मानी जाती है। पर आत्मविश्वास उन सब का संचालक होने से उनकी शक्ति सबसे अधिक है।

नमस्कार महामंत्र अर्हत् वाणी है, इसमें अष्टकर्म क्षय का पूर्ण सामर्थ है। इसके आराधक मोक्ष मंजिल को तो पाते ही हैं, साथ–साथ जिनकी वाणी और हृदय में यह मंत्र रम जाता है उनके व्याधि, जल, अग्नि, चोर, सिंह, हाथी, संग्राम तथा सर्प आदि के भय भी स्वतः नष्ट हो जाते हैं। इस महामंत्र के प्रभाव से शत्रु मित्र हो जाता है, विष अमृत हो जाता है। विपत्ति सम्पत्ति रूप हो जाती है। और दुख सुख रूप में बदल जाते हैं। यह महाप्रभावी विघ्न विनाशक और मंगलकारी मंत्र है। नमस्कार महामंत्र की वर्णमाला इस प्रकार है–

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंचणमुक्कारो, सव्व पावपणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

इसे णमोकार मंत्र, अनादिनिधन मंत्र, मंगलमंत्र, परमेष्ठीवाचक मंत्र, चौरासी लाख मंत्रों का राजा, तरण तारण मंत्र, महामंत्र, अपराजित मंत्र, मूलमंत्र, मंत्रराज, सर्वमान्य मंत्र आदि अनेक नामों से जाना जाता है। ओम् परमेष्ठी का वाचक है। अरहंत, अशरीरी अर्थात् सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, मुनि (साधु) ये पांच परमेष्ठी है। इनके पहले अक्षरों को मिलाने से ओम् की सिद्धि होती है। मंत्र मुक्ति प्रदान करता है। मंत्र जाप से सकारात्मकता आती है। त्रिमंत्र में पंचपरमेष्ठी के अतिरिक्त ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय और ऊँ नमः शिवाय की साधना की जाती है।